**दण्डिक परिवाद**

न्यायालय ..................

दाण्डिक परिवाद सं. ................... सन् .................

थाना के मुद्दे में : .................

अबक .............परिवादी

बनाम

1. कखग
2. चछज .................प्रत्यर्थी

**भारतीय दण्ड संहिता, 1860 की धारा 406 एवम् 420 सपठित धारा 120- ख के अधीन दाण्डिक परिवाद –**

आदरणीय श्रीमान जी,

ऊपर नामित परिवादी निम्नलिखित रूप में अति सादर पूर्वक निवेदन करता है -

1. यह कि परिवादी एक व्यवसायी है और शान्तिप्रिय व्यक्ति है (इसमें परिवाद को उल्लिखित करें) सभी अभियुक्तों ने ................. रुपये की एक को परिवादी की (duping) के पश्चात् तथा दुव्यर्पदेशन करके भारतीय दण्ड संहिता 1860 की धाराये 406 एवम् 420 सपठित धारा 120-ख के अधीन अपराध कारित किया है, विशेषकर उसी समय जब वे उनके द्वारा विक्रय किया जाने के लिए करार पायी गयी सम्पत्ति के स्वामी नहीं थे।

**प्रार्थना**

यह अति सादर पूर्वक प्रार्थना की जाती है कि अभियुक्त सं. 1 एवम् 2 को समन किया जाए तथा विधि के अनुसार उपर्युक्त अपराधो के लिए विचारण किया जाए तथा विधि के अनुसार दण्डित किया जाए।

स्थान : परिवादी जरिये अधिवक्ता

तारीख :